

सूरह सबा - 34



सूरह सबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

- इस में सबा जाति के चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में संदेहों को दूर करते हुये अल्लाह का परिचय ऐसे कराया गया है जिस से तौहीद तथा आखिरत के प्रति विश्वास हो जाता है।
- इस में दावूद तथा सुलैमान (अलैहिमस्सलाम) पर अल्लाह के पुरस्कारों और उन पर उन के आभारी होने का वर्णन तथा सबा जाति की कृतघ्नता और उस के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- शिर्क का खण्डन तथा विरोधियों का जवाब देते हुये परलोक के कुछ तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं।
- सूरह के अन्त में सोच-विचार कर के निर्णय करने का सुझाव दिया गया है और इस बात पर सावधान किया गया है कि समय निकल जाने पर पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आयेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस के अधिकार में है जो आकाशों तथा धरती में है। और उसी की प्रशंसा है आखिरत (परलोक) में। और वही उपाय जानने वाला सब से सूचित है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَكِيمُ

2. वह जानता है जो कुछ घुसता है धरती के भीतर तथा जो¹ निकलता है उस से, तथा जो उतरता है

يَعْلَمُ مَا يَكُونُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا
وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَخْرُجُ فِيهَا

1 जैसे वर्षा, कोष और निधि आदि।

आकाश^[1] से और चढ़ता है उस में^[2]
तथा वह अति दयावान् क्षमी है।

وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ

3. तथा कहा काफ़िरो ने कि हम पर प्रलय नहीं आयेगी। आप कह दें: क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! वह तुम पर अवश्य आयेगी जो परोक्ष का ज्ञानी है। नहीं छुपा रह सकता उस से कण बराबर (भी) आकाशों तथा धरती में, न उस से छोटी कोई चीज़ और न बड़ी किन्तु वह खुली पुस्तक में (अंकित) है।^[3]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَ كَلِمَةً غَيِّبٌ لَّا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغُرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ

4. ताकि^[4] वह बदला दे उन को जो ईमान लाये तथा सुकर्म किये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ

5. तथा जिन्होंने प्रयत्न किये हमारी आयतों में विवश^[5] करने का तो यही है जिन के लिये यातना है अति घोर दुखदायी।

وَالَّذِينَ سَعَوْا إِلَىٰ آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٌ

6. तथा (साक्षात्) देख^[6] लेंगे जिन को उस का ज्ञान दिया गया है जो अवतरित किया गया है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। वही सत्य है, तथा सुपथ दर्शाता है, अति प्रभुत्वशाली प्रशंसित का सुपथ।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ

1 जैसे वर्षा, ओला, फ़रिश्ते और आकाशीय पुस्तकें आदि।

2 जैसे फ़रिश्ते तथा कर्म।

3 अर्थात् लौहे महफूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में।

4 यह प्रलय के होने का कारण है।

5 अर्थात् हमारी आयतों से रोकते हैं और समझते हैं कि हम उन को पकड़ने से विवश होंगे।

6 अर्थात् प्रलय के दिन कि कुर्आन ने जो सूचना दी है वह साक्षात् सत्य है।

7. तथा काफ़िरो ने कहा: क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति को बतायें जो तुम्हें सूचना देता है कि जब तुम पूर्णतः चूर-चूर हो जाओगे तो अवश्य तुम एक नई उत्पत्ति में होगे?
8. उस ने बना ली है अल्लाह पर एक मिथ्या बात, अथवा वह पागल हो गया है। बल्कि जो विश्वास (ईमान) नहीं रखते आखिरत (परलोक) पर, वह यातना¹ तथा दूर के कुपथ में है।
9. क्या उन्होंने ने नहीं देखा उस की ओर जो उन के आगे तथा उन के पीछे आकाश और धरती है। यदि हम चाहें तो धंसा दें उन के सहित धरती को अथवा गिरा दें उन पर कोई खण्ड आकाश से। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है प्रत्येक भक्त के लिये जो ध्यानमग्न हो।
10. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को अपना कुछ अनुग्रह² हे पर्वतो! सरुचि महिमा गान करो³ उस के साथ, तथा हे पक्षियो! तथा हम ने कोमल कर दिया उस के लिये लोहा को।
11. कि बनाओ भरपूर कवचें तथा अनुमति रखो उस की कड़ियों को, तथा सदाचार करो। जो कुछ तुम कर रहे हो उसे मैं देख रहा हूँ।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَهَلْ نَدُوكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ
يُتَّبِعُكُمْ إِذَا امْرَأَتُكُمْ كُلٌّ مُمَرِّقٍ إِنَّكُمْ
لَكَيْفَ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

أَفَتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَيْدًا بِأَمْرِهِ جُنَّةً بَلِ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ
الْبُعِيدِ ۝

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِن نَّشَاءُ خَفَّ بِهُمُ الْأَرْضُ
أَوْ نَسْقُطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِمَّا فَضَّلْنَا يُجِبَالٍ أَوْيَ
مَعَهُ وَالطَّيْرَ وَآلَكَ لَهُ الْحَدِيدَ ۝

إِن أَعْمَلْ سَبِغَتْ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوا
صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

1 अर्थात् इस का दूष्परिणाम नरक की यातना है।

2 अर्थात् उन को नबी बनाया और पुस्तक का ज्ञान प्रदान किया।

3 अल्लाह के इस आदेश अनुसार पर्वत तथा पक्षी उन के लिये अल्लाह की महिमा गान के समय उन की ध्वनी को दुहराते थे।

12. तथा (हम ने वश में कर दिया) सुलैमान^[1] के लिये वायु को। उस का प्रातः चलना एक महीने का तथा संध्या का चलना एक महीने का^[2] होता था। तथा हम ने बहा दिये उस के लिये तांबे के स्रोत। तथा कुछ जिन्न कार्यरत थे उस के समक्ष उस के पालनहार की अनुमति से। तथा उन में से जो फिरेगा हमारे आदेश से तो हम चखायेंगे^[3] उसे भड़कती अग्नि की यातना।

13. वह बनाते थे उस के लिये जो वह चाहता था भवन (मस्जिदें) और चित्र तथा बड़े लगन जलाशयों (तालाबों) के समान तथा भारी देगें जो हिल न सकें। हे दावूद के परिजनो! कर्म करो कृतज्ञ हो कर, और मेरे भक्तों में थोड़े ही कृतज्ञ होते हैं।

14. फिर जब हम ने उस (सुलैमान) पर मौत का निर्णय कर दिया तो जिन्नों को उन के मरण पर एक घुन के सिवा किसी ने सूचित नहीं किया जो उस की छड़ी खा रहा था^[4]। फिर जब वह गिर गया तो जिन्नों पर यह

وَلَسْلِمْنَ الزَّيْحَ عُدُّهَا شَهْرٌ وَرَوَّاحُهَا شَهْرٌ
وَأَسْلَمْنَا لَهُ الْفُطُورَ وَمِنَ الْجِنِّ مَن يَعْمَلُ بَيْنَ
يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نَذَرُهُ
مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُونَ مِنْ مَّحَارِبٍ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ
كَالْجُؤَابِ وَقُدُورٍ رُسِيَّتٍ إِجْعَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا
وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ۝

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ
إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ
الْجِنَّ أَنَّ كُوْنَهُمْ يُعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لِيَئْتُوا فِي
الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम) के पुत्र तथा नबी थे।

2 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अपने राज्य के अधिकारियों के साथ सिंहासन पर आसीन हो जाते। और उन के आदेश से वायु उसे इतनी तीव्र गति से उड़ा ले जाती कि आधे दिन में एक महीने की यात्रा पूरी कर लेते। इस प्रकार प्रातः संध्या मिला कर दो महीने की यात्रा पूरी हो जाती। (देखिये: इब्ने कसीर)

3 अर्थात् नरक की यातना।

4 जिस के सहारे वह खड़े थे तथा घुन के खाने पर उन का शव धरती पर गिर पड़ा।

बात खुली कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान कारी^[1] यातना में नहीं पड़े रहते।

15. सबा^[2] की जाति के लिये उन की बस्तियों में एक निशानी^[3] थी: बाग थे दायें और बायें। खाओ अपने पालनहार का दिया हुआ, और उस के कृतज्ञ रहो। स्वच्छ नगर है तथा अति क्षमी पालनहार।

16. परन्तु उन्होंने मुँह फेर लिया तो भेज दी हम ने उन पर बांध तोड़ बाढ़। तथा बदल दिया हम ने उन के दो बागों को दो कड़वे फलों के बागों और झाऊ तथा कुछ बैरी से।

17. यह कुफल दिया हम ने उन के कृतघ्न होने के कारण। तथा हम कृतघ्नों ही को कुफल दिया करते हैं।

18. और हम ने बना दी थी उन के बीच तथा उन की बस्तियों के बीच जिस में हम ने समपन्नता^[4] प्रदान की थी खुली बस्तियाँ तथा नियत कर दिया था उन में चलने का स्थान^[5] (कि) चलो उस में रात्रि तथा दिनों के

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ جَنَّتَانِ عَنْ يَمِينٍ
وَشِمَالٍ كُلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ
بَلَدٌ طَيِّبٌ وَرَبُّ غَفُورٌ

فَاَعْرِضُوا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعُورِ وَبَدَّلْنَاهُمْ
بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ اَكْلِ خَضِطٍ وَاَثَلٍ وَتَوَّي
مِنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ

ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِمَا كَفَرُوا وَهَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَافِرِينَ

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرًى
ظَاهِرَةً وَفَدَرْنَا فِيهَا السَّيْرَ سِيرُوا فِيهَا لَيَالٍ
وَأَيَّامًا آمِنِينَ

1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के युग में यह भ्रम था कि जिन्हें को परोक्ष का ज्ञान होता है। जिसे अल्लाह ने माननीय सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के निधन द्वारा तोड़ दिया कि अल्लाह के सिवा किसी को परोक्ष का ज्ञान नहीं है। (इब्ने कसीर)

2 यह जाति यमन में निवास करती थी।

3 अर्थात् अल्लाह के सामर्थ्य की।

4 अर्थात् सबा तथा शाम (सीरिया) के बीच है।

5 अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा की सुविधा रखी थी।

समय शान्त^[1] हो कर।

19. तो उन्होंने कहा: हे हमारे पालनहार! दूरी^[2] कर दे हमारी यात्राओं के बीच। तथा उन्होंने अत्याचार किया अपने ऊपर। अंततः हम ने उन्हें कहानियाँ^[3] बना दिया, और तित्तर बित्तर कर दिया। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (शिक्षायें) हैं प्रत्येक अति धैर्यवान कृतज्ञ के लिये।

20. तथा सच्च कर दिया इब्लीस ने उन पर अपना अंकलन।^[4] तो उन्होंने अनुसरण किया उस का एक समुदाय को छोड़ कर ईमान वालों के।

21. और नहीं था उस का उन पर कुछ अधिकार (दबाव) किन्तु ताकि हम जान लें कि कौन ईमान रखता है आखिरत (परलोक) पर उन में से जो उस के विषय में किसी संदेह में है। तथा आप का पालनहार प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।^[5]

22. आप कह दें: उन (पूज्यों) को पुकारो^[6] जिन को तुम समझते हो अल्लाह के सिवा। वह नहीं अधिकार रखते कण

فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ
إِلَّا قَلِيلًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ
يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنهَا فِي شَكٍّ
وَرَبُّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ دُونِ اللَّهِ
لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي

1 शत्रु तथा भूख-प्यास से निर्भय हो कर।

2 हमारी यात्रा के बीच कोई बस्ती न हो।

3 उन की कथायें रह गई, और उन का अस्तित्व नहीं रह गया।

4 अर्थात् यह अनुमान कि वह आदम के पुत्रों को कुपथ करेगा। (देखिये सूरह आराफ़, आयत: 16, तथा सूरह साद, आयत: 82)

5 ताकि उन का प्रतिकार बदला दे।

6 इस में संकेत उन की ओर है जो फरिश्तों को पूजते तथा उन्हें अपना सिफारशी मानते थे।

बराबर भी आकाशों में न धरती में तथा नहीं है उन का उन दोनों में कोई भाग। और नहीं है उस अल्लाह का उन में से कोई सहायक।

الْأَرْضُ وَمَالُهُمْ فِيهِنَّ مِنْ شِئْرِكٍ وَمَالَهُ
مِنْهُمْ مِنْ ظُهُورٍ

23. तथा नहीं लाभ देगी अभिस्तावना (सिफारिश) अल्लाह के पास परन्तु जिस के लिये अनुमति देगा।^[1] यहाँ^[2] तक कि जब दूर कर दिया जाता है उद्वेग उन के दिलों से तो वह (फ़रिश्ते) कहते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा? वे कहते हैं कि सत्य कहा। तथा वह अति उच्च महान् है।

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ
إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ
قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ

24. आप (मुश्रिकों) से प्रश्न करें कि कौन जीविका प्रदान करता है तुम्हें आकाशों^[3] तथा धरती से? आप कह दें कि अल्लाह। तथा हम अथवा तुम अवश्य सुपथ पर हैं अथवा खुले कुपथ में हैं।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ
وَإِنَّا أَكْفَارٌ لِمَا لَعَلْ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ

25. आप कह दें: तुम से नहीं प्रश्न किया जायेगा हमारे अपराधों के विषय में, और न हम से प्रश्न किया जायेगा तुम्हारे कर्मों के^[4] संबंध में।

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَنْ أَجْرَمَتِكُمْ وَلَا تَسْأَلُ عَنْ أَسْمَائِكُمْ

1 (देखिये सूरह बकरा, आयत: 255, तथा सूरह अम्बिया, आयत: 28)

2 अर्थात् जब अल्लाह आकाशों में कोई निर्णय करता है तो फ़रिश्ते भय से काँपने और अपने पंखों को फड़फड़ाने लगते हैं। फिर जब उन की उद्विग्नता दूर हो जाती है तो प्रश्न करते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या आदेश दिया है? तो वे कहते हैं कि उस ने सत्य कहा है। और वह अति उच्च महान् है। (संक्षिप्त अनुवाद हदीस, सहीह बुखारी नं॰: 4800)

3 आकाशों की वर्षा तथा धरती की उपज से।

4 क्योंकि हम तुम्हारे शिर्क से विरक्त हैं।

26. आप कह दें कि एकत्रित^[1] कर देगा हमें हमारा पालनहार। फिर निर्णय कर देगा हमारे बीच सत्य के साथ। तथा वही अति निर्णय कारी सर्वज्ञ है।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبَّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا الْحَقُّ
وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝

27. आप कह दें कि तनिक मुझे उन को दिखा दो जिन को तुम ने मिला दिया है अल्लाह के साथ साझी^[2] बना कर? ऐसा कदापि नहीं। बल्कि वही अल्लाह है अत्यंत प्रभावशाली तथा गुणी।

قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَهَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا
بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

28. तथा नहीं भेजा है हम ने आप^[3] को

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِن

1 अर्थात प्रलय के दिन।

2 अर्थात पूजा-आराधना में।

3 इस आयत में अल्लाह ने जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विश्वव्यापी रसूल तथा सर्व मनुष्य जाति के पथ प्रदर्शक होने की घोषणा की है। जिसे सूरह आराफ़, आयत नं॰: 158, तथा सूरह फुर्कान आयत नं॰: 1, में भी वर्णित किया गया है। इसी प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे पाँच ऐसी चीज़ दी गई है जो मुझ से पूर्व किसी नबी को नहीं दी गई। और वे ये हैं:

1- एक महीने की दूरी तक शत्रुओं के दिलों में मेरी धाक द्वारा मेरी सहायता की गई है।

2- पूरी धर्ती मेरे लिये मस्जिद तथा पवित्र बना दी गई है।

3- युद्ध में प्राप्त धन मेरे लिये वैध कर दिया गया है जो पहले किसी नबी के लिये वैध नहीं किया गया।

4- मुझे सिफ़ारिश का अधिकार दिया गया है।

5- मुझ से पहले के नबी मात्र अपने समुदाय के लिये भेजा जाता था परन्तु मुझे सम्पूर्ण मानव जाति के लिये नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी: 335)

आयत का भावार्थ यह है कि आप के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप के लाये धर्म विधान कुर्आन का अनुपालन करना पूरे मानव विश्व पर अनिवार्य है। और यही सत्धर्म तथा मुक्ति-मार्ग है। जिसे अधिकतर लोग नहीं जानते।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: उस की शपथ जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं! इस उम्मत का कोई यहूदी और ईसाई मुझे सुनेगा और मौत से पहले मेरे धर्म पर ईमान नहीं लायेगा तो वह नरक में जायेगा। (सहीह मुस्लिम: 153)

أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

परन्तु सब मनुष्यों के लिये शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला बनाकर। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।

29. तथा वह कहते^[1] हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

30. आप उन से कह दें कि एक दिन वचन का निश्चित^[2] है। वे नहीं पीछे होंगे उस से क्षण भर और न आगे होंगे।

قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَغْنِي ۝

31. तथा काफिरों ने कहा कि हम कदापि ईमान नहीं लायेंगे इस कुर्आन पर और न उस पर जो इस से पूर्व की पुस्तक है। और यदि आप देखेंगे इन अत्याचारियों को खड़े हुये अपने पालनहार के समक्ष तो वे दोषारोपण कर रहे होंगे एक दूसरे पर। जो निर्बल समझे जा रहे थे वे कहेंगे उन से जो बड़े बन रहे थे: यदि तुम न होते तो हम अवश्य ईमान लाने वालों^[3] में होते।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْجَعُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ لِّلْقَوْلِ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لِّلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا الْوَلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۝

32. वह कहेंगे जो बड़े बने हुये थे उन से जो निर्बल समझे जा रहे थे: क्या हम ने तुम्हें रोका सुपथ से जब वह तुम्हारे पास आया? बल्कि तुम ही अपराधी थे।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِّلَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لَنُصْغِرُنَّ صَدْدًا لَّهُمْ عَنِ الْهَدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَهُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ۝

33. तथा कहेंगे जो निर्बल होंगे उन से जो बड़े (अहंकारी) होंगे: बल्कि

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لِّلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ

1 अर्थात् उपहास करते हैं।

2 प्रलय का दिन।

3 तुम्हीं ने हमें सत्य से रोक दिया।

रात-दिन के षड्यंत्र^[1] ने, जब तुम हमें आदेश दे रहे थे कि हम कुफ़्र करें अल्लाह के साथ तथा बनायें उस के साक्षी, तथा अपने मन में पछतायेंगे जब यातना देखेंगे। और हम तौक डाल देंगे उन के गलों में जो काफ़िर हो गये, वह नहीं बदला दिये जायेंगे परन्तु उसी का जो वह कर रहे थे।

34. और नहीं भेजा हम ने किसी बस्ती में कोई सचेतकर्ता (नबी) परन्तु कहा उस के सम्पन्न लोगों ने: हम जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो उसे नहीं मानते हैं।^[2]

35. तथा कहा कि हम अधिक हैं तुम से धन और संतान में। तथा हम यातना ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।

36. आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है। और नाप कर देता है। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।

37. और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी नहीं है कि तुम्हें हमारे कुछ

مَكَرًا لَّيْلٍ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَ بِأَنْ تَكْفُرَ بِاللَّهِ
وَجَعَلَ لَهُ آتَادًا وَأَسْرُوا الشَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ
كَفَرُوا هَلْ يُخْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٤﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا
إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٥﴾

وَقَالُوا عَنُ الْكُفْرَ أَمْوَالُ الْأَوْلَادِ أَوْ مَا عَنُ
بِمُعَدِّينَ ﴿٣٦﴾

قُلْ إِن رَّبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَلَكِن أَكْثَر النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالْبَاقِي تَغْنَمُ بِكُمْ

1 अर्थात् तुम्हारे षड्यंत्र ने हमें रोका था।

2 नबियों के उपदेश का विरोध सब से पहले सम्पन्न वर्ग ने किया है। क्योंकि वे यह समझते हैं कि यदि सत्य सफल हो गया तो समाज पर उन का अधिकार समाप्त हो जायेगा। वे इस आधार पर भी नबियों का विरोध करते रहे कि हम ही अल्लाह के प्रिय हैं। यदि वह हम से प्रसन्न न होता तो हमें धन-धान्य क्यों प्रदान करता। अतः हम परलोक की यातना में ग्रस्त नहीं होंगे। कुर्आन ने अनेक आयतों में उन के इस भ्रम का खण्डन किया है।

समीप^[1] कर दे। परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार करे तो यही है जिन के लिये दोहरा प्रतिफल है। और यही ऊँचे भवनों में शान्त रहने वाले हैं।

38. तथा जो प्रयास करते हैं हमारी आयतों में विवश करने के लिये^[2] तो वही यातना में ग्रस्त होंगे।

39. आप कह दें: मेरा पालनहार ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से। और तंग करता है उस के लिये। और जो भी तुम दान करोगे तो वह उस का पूरा बदला देगा। और वही उत्तम जीविका देने वाला है।

40. तथा जिस दिन एकत्र करेगा उन सब को, फिर कहेगा फ़रिश्तों से: क्या यही तुम्हारी इबादत (बंदना) कर रहे थे।

41. वह कहेंगे: तू पवित्र है! तू ही हमारा संरक्षक है न कि यहाँ बल्कि यह इबादत करते रहे जिन्नों^[3] की। इन में अधिकतर उन्हीं पर ईमान लाने वाले हैं।

42. तो आज तुम^[4] में से कोई एक-दूसरे को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का अधिकार नहीं रखेगा। तथा हम कह देंगे अत्याचारियों से कि तुम अग्नि की

عِنْدَنَا زُلْفَىٰ ۖ الْإِمْنُ أَهْلًا وَعَمَلٌ صَالِحًا ۚ
فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الصُّعُوفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ
فِي الْعُرْفِ الْمُؤْنُونَ ۝

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَجْرًا ۚ
فِي الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ۝

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ
فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَكَةِ
أَهْلَ الْأَرْضِ إِنَّا كُنَّا نَعْبُدُونَ ۝

قَالُوا اسْمِعْنَاكَ أَنْتَ وَلَكِنَّا مِنْ دُونِهِمْ قِيلَ
كَانُوا يَعْبُدُونَ الْإِنِّ ۚ أَكْثَرُهُمْ بِهُمْ مُؤْمِنُونَ ۝

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفَعًا وَلَا ضَرًّا ۚ
وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي
كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

1 अर्थात् हमारा प्रिय बना दे।

2 अर्थात् हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिये।

3 अरब के कुछ मुशरिक लोग, फ़रिश्तों को पूज्य समझते थे। अतः उन से यह प्रश्न किया जायेगा।

4 अर्थात् मिथ्या पूज्य तथा उन के पुजारी।

यातना चखो जिसे तुम झुठला रहे थे।

43. और जब सुनाई जाती है उन के समक्ष हमारी खुली आयतें तो कहते हैं: यह तो एक पुरुष है जो चाहता है कि तुम्हें रोक दे उन पुज्यों से जिन की इबादत करते रहे हैं तुम्हारे पूर्वज। तथा उन्होंने कहा कि यह तो बस एक झूठी बनायी हुयी बात है। तथा कहा काफ़िरो ने इस सत्य को कि यह तो बस एक प्रत्यक्ष (खुला) जादू है।

44. जब कि हम ने नहीं प्रदान की है इन (मक्का वासियों) को कोई पुस्तक जिसे वे पढ़ते हों। तथा न हम ने भेजा है इन की ओर आप से पहले कोई सचेत करने वाला।^[1]

45. तथा झुठलाया था इन से पूर्व के लोगों ने और नहीं पहुँचे यह उस के दसवें भाग को भी जो हम ने प्रदान किया था उन को। तो उन्होंने झुठला दिया मेरे रसूलों को अन्ततः मेरा इन्कार कैसा रहा?^[2]

46. आप कह दें कि मैं बस तुम्हें एक बात की नसीहत कर रहा हूँ कि तुम अल्लाह के लिये दो-दो तथा अकेले-अकेले खड़े हो जाओ। फिर

وَإِذَا شَتَّىٰ عَلَيْهِمُ الْيَتْنَا بَتَّيْتُ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاءَكُمْ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۖ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا الْحَقُّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا سَعْرٌ مُّسْتَبِينٌ ۝

وَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ۝

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَبَالِغُوا مَعْشَارَ مَا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا أَرْسِلْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۖ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مِثْلَىٰ شِئْنِي وَفُرَادَىٰ شُومٍ تَتَفَكَّرُونَ ۚ إِنَّكُمْ لِمَعَاصِيَكُمْ مِنْ جُنَّةٍ ۖ إِنَّ هُوَ الْإِنذِيرُ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيِ

1 तो इन्हें कैसे ज्ञान हो गया कि यह कुर्आन खुला जादू है? क्यों कि यह ऐतिहासिक सत्य है कि आप से पहले मक्का में कोई नबी नहीं आया। इसलिये कुर्आन के प्रभाव को स्वीकार करना चाहिये न कि उस पर जादू होने का आरोप लगा दिया जाये।

2 अर्थात् आद और समूद ने। अतः मेरे इन्कार के दुष्परिणाम अर्थात् उन के विनाश से इन्हें शिक्षा लेनी चाहिये। जो धन-बल तथा शक्ति में इन से अधिक थे।

عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝

सोचो! तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं है।^[1] वह तो बस सचेत करने वाले है तुम्हें आगामी कड़ी यातना से।

47. आप कह दें: मैं ने तुम से कोई बदला माँगा है तो वह तुम्हारे^[2] ही लिये है। मेरा बदला तो बस अल्लाह पर है। और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجَبْتُمْ
إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

48. आप कह दें कि मेरा पालनहार वही करता है सत्य की। वह परोक्षों का अति ज्ञानी है।

قُلْ إِنْ رَبِّي يَتَذَكَّرُ بِالْحَقِّ عِلْمُ الْغُيُوبِ ۝

49. आप कह दें कि सत्य आ गया। और असत्य न (कुछ का) आरंभ कर सकता है और न (उसे) पुनः ला सकता है।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِي الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝

50. आप कह दें कि यदि मैं कुपथ हो गया तो मेरे कुपथ होने का (भार) मुझ पर है। और यदि मैं सुपथ पर हूँ तो उस वही के कारण जिसे मेरी ओर मेरा पालनहार उतार रहा है। वह सब कुछ सुनने वाला, समीप है।

قُلْ إِنْ صَلَّيْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي وَإِنْ
اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُؤْتِي إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۝

51. तथा यदि आप देखेंगे जब वह घबराये हुये^[3] होंगे तो उन के खोजने का कोई उपाय न होगा। तथा पकड़ लिये जायेंगे समीप स्थान से।

وَلَوْ تَرَى إِذْ فِرْعَوْنُ أَفْلَحَ وَاتَّخَذُوا مِنْ
مَكَانٍ قَرِيبٍ ۝

52. और कहेंगे: हम उस^[4] पर ईमान

وَقَالُوا الْمَتَابُ إِنَّ لَهْمُ النَّتَاجِ مِنْ

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दशा के बारे में।

2 कि तुम संमार्ग अपनाकर आगामी प्रलय की यातना से सुरक्षित हो जाओ।

3 प्रलय की यातना देख कर।

4 अर्थात् अल्लाह तथा उस के रसूल पर।

مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝

लाये। तथा कहाँ हाथ आ सकता है
उन के (ईमान) इतने दूर स्थान^[1] से?

53. जब कि उन्होंने कुफ़र कर दिया पहले
उस के साथ। और तीर मारते रहे
बिन देखे दूर^[2] से।

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْدُونَ بِالْغَيْبِ
مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝

54. और रोक बना दी जायेगी उन
के तथा उस के बीच जिस की वे
कामना करेंगे जैसे किया गया इन के
जैसों के साथ इस से पहले। वास्तव
में वे संदेह में पड़े थे।

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ
مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُذِيبٍ ۝

1 ईमान लाने का स्थान तो संसार था। परन्तु संसार में उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया।

2 अर्थात् अपने अनुमान से असत्य बातें करते रहे।